© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

बालकों को पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

डॉ संगीता सिंह
495/1, अलोपी बाग,
इलाहाबाद।

मानव का उद्भव प्रकृति की गोद में हुआ है। प्रकृति ने ही जीवन जीने के लिए समय–समय पर आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये है। मानव ने कई वर्षो तक प्रकृति को सहेज कर रखने का अथक प्रयास किया परन्तु आज वही मानव मानवीय मूल्यों से परे होकर प्रकृति के अनावश्यक दोहन में लीन होता चला जा रहा है। परिणाम स्वरूप आज हमारे गॉव, शहर, खाद्यान्न, जल स्रोत, वायु मण्डल आदि पर्यावरण असंतुलन के कारण दूषित होते जा रहे हैं। यदि इस दुष्चक्र को समय रहते न तोड़ा गया तो आने वाले समय में मानवजाति का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। इस प्रलयकारी स्थिति से बचने के लिये आवश्यक है कि समय रहते हुए हम स्वयं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हो जायें, साथ ही अपने आस–पास के लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनायें। चूँकि बच्चे ही आगे चलकर इस देश की पर्यावरण की स्थिति सुधार सकते हैं। अतः सबसे आवश्यक है इन बच्चों को पर्यावरण का ज्ञान कराना। मनोविज्ञानियों का कहना है कि बच्चों मे जो भी अच्छी या बुरी आदत पड़ जाती है वह आजीवन बनी रहती है। इसलिये बच्चों मे अच्छी आदतो को डालना चाहिये। इसीलिये बच्चों को आगे चलकर पर्यावरण संरक्षण के लिये पर्यावरण की शिक्षा देना आवश्यक है। दूसरे शब्दो मे बच्चा अच्छी आदते सिखकर उसका उपयोग घर मे करेगा। इससे उसके परिवार मे भी अच्छी आदतों का विकास होगा।

बच्चों मे प्राथमिक स्तर से ही पर्यावरण संरक्षण की आदत विकसित करनी चाहिये। इसके लिये शिक्षकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। शिक्षक प्रारम्भ से ही बच्चों मे पर्यावरण के बीज बोये ताकि आने वाले समय मे बच्चें पर्यावरण को सहेजने वाले विशाल वृक्ष का रूप लेने मे सफल हो सके।

आज की भयावह स्थिति को देखकर सरकारे भी पर्यावरण जागरूकता के लिये गम्भीर हुयी है। इसलिये अन्य कार्यो के साथ ही साथ बच्चो के पर्यावरण शिक्षा और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर भी जोर दिया जा रहा है। आज प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन विषय पाठक्रम मे सम्मिलित है। इसके माध्यम से बच्चों को पर्यावरण की शिक्षा दी जा रही है। इतना ही नही बच्चों के साथ–साथ अध्यापको को भी इस सम्बन्ध मे प्रशिक्षित किया जाता है। इसमे बच्चों को पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने के रोचक तरीके बताये जाते है। इसके माध्यम से शिक्षकों को एक मंच मिलता है जिससे वे एक दूसरे के विचारो को समझ कर अपने विद्यालय मे कक्षा शिक्षण के दौरान उसका उपयोग करते है।

इन सभी बातो को ध्यान मे रखकर विद्वानो ने पर्यावरण का परिभाषा निम्नवत दिया है– पर्यावरण शिक्षा मानव के चारो ओर व्याप्त जीवित तथा भैतिक वातावरण का शिक्षा है।[1] '' पर्यावरण

शिक्षा एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जिसमे जीव जन्तुवों, पेड पौधों तथा मनुष्य समुदाय के अपने वातावरण के साथ अन्तर सम्बन्धों को व्याख्यायित किया जाता है।''[2]

बच्चों को इस बात का ज्ञान कराना होगा की आधुनिक जीवन शैली और रहन सहन के तरीको ने पर्यावरण को काफी प्रभावित किया है। बढते औद्योगीकरण ने जहॉ एक ओर नदियो क जल को दूषित करने का काम किया है वही दूसरी ओर वाहनो और कल कारखानो से निकलने वाले काले धूयें से वातावरण मे वायु प्रदूषण का खतरा बढा है। देश के विशाल जनसंख्या के लिये भोजन और आवास की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये पेड पौधों की अन्धा–धुंध कटाई होने से पर्यावरण का संतुलन तेजी से विगड रहा है। इन सभी पहलुओ की ओर ध्यान आकर्षित करने का एक मात्र उद्देश्य यही है की बच्चे अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक बने। बच्चों को यह भी बताना होगा की हमारी कल की दुनिया तभी रहने योग्य बची रहेगी, जब हमारा आज का आचरण पर्यावरण के अनुकूल होगा पर्यावरण के प्रति हमारी थोड़ी जागरूकता इसके संरक्षण मे एक बडी भूमिका निभा सकती है।

वर्तमान समय को देखते हुये पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता का पमुख कारण पारिवारिक तथा सामाजिक परिस्थियो मे परिवर्तन है। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था मे बालक की शिक्षा की शुरूवात पाठशाला से उसके संस्कारो का विकास एवं मानसिक अभिवृत्त होती थी तत्पश्चात समाज से वह अपने अन्तर सम्बन्धों के कारण प्राप्त हुये अनुभवो से जीवन पर्यन्त सिखता था जिसमे वह कभी शिक्षक का दायित्व भी निभाता था। आज बालक प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम परिवार के स्थान पर पास–पडोस, चलचित्र, दूरदर्शन एवं कम्प्यूटर हो गया है। इसका प्रभाव अभिनय से परिपूर्ण शिष्टाचार पर दिखाई पड़ता है। वर्तमान समय मे व्यवहार की परिभाषा बदल चुकी है। व्यवहार का अर्थ काम निकालना या काम करा लेने की क्षमता हो गया है। उपर्युक्त परिवर्तनो का निष्कर्ष है, मानवीय सोच एवं विचारधारा मे बदलाव। जैसे पहले वृक्षो को रात मे हाथ लगाना पाप माना जाता था, आज उन्ही पेडो को काट कर बेच दिया जाता है। मानवीय सोच मे आये बदलाव ने ही प्राकृतिक संतुलन बिगाडा है। पर्यावरणीय संतुलन के फलस्वरूप आज मनुष्य के ही अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। अतः वर्तमान समय मे आवश्यकता है मानवीय सोच, उसकी अभिवृत्ति मे परिवर्तन करने की और निश्चित रूप से यह कार्य शिक्षा ही कर सकता है।

आज की आवश्यकता है कि पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से बालको को सुरूवात से ही पर्यावरण घटको के प्रति सचेत किया जाये। बच्चों के बढते हुये बस्ते के आकार को देखते हुये प्रश्न यह उठता है कि एक और नया विषय क्यों? परन्तु यदि विषय की गम्भीरता और आने वाली पिढियो के अस्तित्व के बारे मे सोचा जाये तो पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता स्वयं सिद्ध है। कारण चाहे जो भी हो प्रकृति प्रभावित हुयी है और उसका परिणाम मनुष्य भोग रहा है। इसलिये आज के सन्दर्भ मे पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

पर्यावरण शिक्षा बीसवी सदी के उत्तरार्द्ध मे विकसित पर्यावरण चेतना की उपज है, जिसे प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के स्तरो पर औपचारिक, निरौपचारिक एवं अनुवांशिक तीनो प्रकार की शिक्षा– व्यवस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भो मे महत्वपूर्ण स्थान मिला है। इसके तहत एक अति विकाससील एवं अंतर्निर्धारक पाठ्यक्रम की संरचना सृजित करने तथा इसके बहुआयामी स्वरूप के अन्तर्गत कई आधुनिक रचना– कौशलो, शिक्षण विधियों युक्तियो तथा शैक्षिक तकनीकी के

प्रयोग से जन समान्य को और विशेष तौर पर नई पीडी को पर्यावरण समस्याओ का ज्ञान तथा उसका समाधान का प्रयास किया जा रहा है। आज के इस वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग मे पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता दिनो दिन बढती जा रही है।

पर्यावरण अध्ययन के तीन पहलू हो सकते है।

1. पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरण के माध्यम से शिक्षा है।
2. पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण के विषय मे शिक्षा है।
3. पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण के लिये शिक्षा है।

पर्यावरण के लिये शिक्षा के रूप मे यह पर्यावरण का नियत्रण परिस्थिति की संतुलन की स्थापना तथा पर्यावरणीय पदूषण के नियंत्रण से सम्बन्धित है। पर्यावरण शिक्षा प्रत्यय को समझने के लिये कुछ संस्थाओं के पर्यावरण सम्बन्धी विचार को समझना होगा।

संयुक्त राज्य अमेरिका के अनुसार '' पर्यावरण शिक्षा का अर्थ उस शैक्षिक प्रक्रिया से है। जो मानव के प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वातावरण से सम्बन्धित है। इसमे जनसंख्या प्रदूषण, संसाधनो का विनियोजन एवं निःशेष संरक्षण यातायात प्रौद्योगिकी के सम्बन्ध तथा सम्पूर्ण मानवीय पर्यावरण के शहरी तथा ग्रामीण नियोजन का सम्बन्ध भी निहीत है।[3] एक अन्य संस्था के अनुसार '' पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत मानव उसकी संस्कृति तथा उसके जैविक एवं भौतिक परिवेष को समझने के लिये उपयुक्त कौशल एवं अभिवृत्तियों का विकास करने के लिये मूल्यो के अभिज्ञान तथा प्रयत्नो की स्पष्टी करण की प्रक्रिया सम्मिलित है।''[4] एन0सी0ई0आर0टी0 ने भी बालकों मे उनके लिये निकट तथा दूरस्थ समय एवं स्थान से सम्बद्ध सम्पूर्ण भैतिक एवं सामाजिक वातावरण के बारे मे चेतना और समझ पैदा करना अनिवार्य शिक्षा का अर्थ कहा है।[5]

इस प्रकार हम कह सकते है कि पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरणीय संरक्षण को लागू करने का एक ढंग है। राष्ट्रीय शिक्षा निती 1986 मे इसे एक नये रूप मे परिभाषित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा को शिक्षा के तीन प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर लागू करने के औचित्य एवं उसकी महत्ता को स्पष्ट रूप से निरूपित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा को सामान्य जन सजगता के रूप मे उजागर किया जा सकता है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण के प्रति सजगता तथा संवेदनशीलता उत्पन्न करने की शैक्षिक प्रक्रिया है। जिसमे सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पर्यावरणीय मूल्यो एवं समस्याओ पर केन्द्रित करना है, ताकि सद् नागरिकता का विकास हो सके तथा अधिगम करता पर्यावरण के सम्बन्ध मे भिज्ञ, प्रेरित तथा उत्तरदायी हो सके ।

पर्यावरण संरक्षण एवं उसमे सुधार लाने के लिये पर्यावरण शिक्षा को विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा मे उचित स्थान देते हुये उसके लिये निरौपचारिक एवं दूरस्थ शिक्षा की विधियों को अपनाने की महती आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण के भीतर पायी जाने वाली विकृतियों, प्रदूषण, विविध प्रकार की गिरावटों तथा पर्यावरण सुरक्षा के उपायों पर विशेष रूप से बल देना चाहिए, इसके पाठ्यक्रम को व्यापक बहुआयामी तथा घर की स्त्रियों, चरवाहों, घरेलू नौकरों तथा सेवा कर्मियों के साथ–साथ प्रत्येक आयु वर्ग तथा हर किसी के लिए लागू होना चाहिए।

पर्यावरण सुरक्षा एवं पर्यावरण सुधार के अभियान को व्यापक तौर पर चलाने के लिए समाज की जिम्मेदारी है, किन्तु शिक्षक समाज का एक महत्वपूर्ण एजेन्ट होता है, और इसीलिए इस लक्ष्य की प्राप्ति में उसकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा बुनियादी तौर पर मानव निर्माण और समाज निर्माण की प्रक्रिया है तथा शिक्षा के स्परूप के लिए परिवर्तित करनें में शिक्षक की भूमिका केन्द्रीय होती है। जन मानस की पर्यावरण के अनुरक्षण के लिए तैयार करना होगा, जिससे भौतिक, जैविक जगत को बिना हानि पहुचाये प्रकृति के साथ पूर्ण समायोजन स्थापित किया जा सके। प्रकृति तथा मानव की गुणवत्ता बनी रहे।

पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक संघ भी बनाये गये जिसमें प्राकृतिक संरक्षण के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय संघ'[6] की स्थापना 1948 में की गयी। इसका मुख्यालय मार्गस (स्विटजरलैण्ड) में है यह संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अन्तर्सरकारी एजेन्सियों के लिये विश्व 'वन्यजीव कोष'[7] के कार्यो के साथ समन्वय स्थापित कर वैज्ञानिक रूप से संरक्षण तकनीक को बढ़ावा देता है। 1969 से यह संस्था विलुप्त प्राय, असुरक्षित तथा दुर्लभ जीवों एवं पादपों के संम्बन्धित रेड डाटा बुक जारी करती है। उल्लेखनीय है कि भारत में सर्वाधिक सख्या में संकटापन्न जीव है। पर्यावरण एवं विकास के मुद्दो के पुनर्रीक्षण तथा उनके लिये प्रस्ताव सूचीबद्ध करने के लिए पर्यावरण एवं विकास का विश्वव्यापी आयोग की स्थापना 1984 में हुई। भारत मे भी पर्यावरण संरक्षण हेतु 1980 ई0 में केन्द्रीय स्तर पर पर्यावरण विभाग स्थापित हो चुका है। सन् 1985 में पर्यावरण तथा वन मंत्रालय बना। इसके द्वारा कई परियोजनाओं की शुरूवात हुई। शुरूवात में यूनाइटेड नेशन के स्वीडन [8] सम्मेलन में जो घोषण पत्र आया उसे पर्यावरण क्षेत्र का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। विश्व के तमाम देशों में कानून बनाकर पर्यावरण के समस्या का समाधान हुआ है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि बच्चों को पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य रूप से देना चाहिए। क्यों कि जब तक पर्यावरण के लाभ–हानि एवं आवश्यकताओं को बच्चा नही जानेगा तब तक पर्यावरण संरक्षण करने मे सहयोगी नही होगा। इसलिए सभी के लिए पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य होना चाहिए। शिक्षित बालक आगे चलकर जिस भी व्यवसाय में रहेगा पर्यावरण संरक्षण करता रहेगा। अतः प्रारम्भ से ही बच्चों में पर्यावरण संरक्षण की आदत डालनी चाहिए और यह पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही हो सकेगा।

सन्दर्भ

1. ओडम के अनुसार।
2. चेम्बर्स शब्दकोष।
3. संयुक्त राज्य अमेरिका का पर्यावरण –शिक्षा–अधिनियम।
4. इण्टरनेशनल यूनियन फार द कन्जरवेशन ऑफ नेचर एण्ड नेचुरल रिसोर्स कमीशन ऑफ एजूकेशन 1970।
5. N.C.E.R.T नई दिल्ली।
6. International Union For Conservation Of Nature : IUCN।
7. World Wild Life Fund – WWF ।
8. Stockholm in 1972।